



**Editor**

**Dr. Bapu g. Gholap**

(M.A.Mar.& Pol.Sci.,B.Ed.Ph.D.NET.)



“Printed by: **Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.** Published by **Ghodke Archana Rajendra** & Printed & published at Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.,At.Post. Limbaganesh Dist,Beed -431122 (Maharashtra) and Editor **Dr. Gholap Bapu Ganpat.**



**Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.**

At.Post.Limbaganesh,Tq.Dist.Beed  
Pin-431126 (Maharashtra) Cell:07588057695,09850203295  
harshwardhanpubli@gmail.com, vidyawarta@gmail.com

Reg.No.U74120 MH2013 PTC 251205

All Types Educational & Reference Book Publisher & Distributors / [www.vidyawarta.com](http://www.vidyawarta.com)

गरीब—गरीब ही रह जाता है। किसी का किसी के ऊपर विश्वास नहीं रहता है। हर दिन अखबारों में बलात्कार के विषय पढ़ने को मिलता है। भारतीय भव्य परंपरा, शिष्टता, संस्कृति, सबकुछ लूट होते जा रहे हैं। खुद का खूद पर भी भरोसा उड़ते जा रहे हैं। कभी—कभी इस विडम्बना को देखते हुए आँखों में आँसु, होंठों पर एक मुस्कान दिखाई पड़ता है और एक गीत याद आता है कि —

दुनिया बनानेवाले  
क्या तेरे मन में  
समाई, काहे को  
दुनिया बनाई तुने  
काहे को दुनिया बनाई

#### सन्दर्भ ग्रन्थ

१. मन्नू भंडारी के उपन्यासों में नारी चेतना/  
डॉ. फाल्गुनी पटेल चिंतन प्रकाशन हंसपुरम,  
कानपुर—२०८०२१/पेज नं—२४

२. मन्नू भंडारी के उपन्यासों में नारी चेतना/  
डॉ. फाल्गुनी पटेल चिंतन प्रकाशन हंसपुरम,  
कानपुर—२०८०२१—पेज नं — २४

३. मन्नू भंडारी के उपन्यासों में नारी चेतना/  
डॉ. फाल्गुनी पटेल चिंतन प्रकाशन हंसपुरम,  
कानपुर—२०८०२१/पेज नं—४६



29

## उत्तराखंड के राजनीतिक परिदृश्य में धार्मिक अल्पसंख्यकों की भूमिका

डॉ. हरिओम प्रकाश सिंह

शोध निदेशक प्राचार्य

राजकीय महाविद्यालय दुगनाकुरी बागेश्वर

शाजिया सिद्दीकी

असिस्टेंट प्रोफेसर राजनीति विज्ञान

राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय,

नागनाथ पोखरी, चमोली

\*\*\*\*\*

#### सारांश

यह शोधपत्र उत्तर भारत के एक राज्य उत्तराखंड के राजनीतिक परिदृश्य में धार्मिक अल्पसंख्यकों के प्रभाव और भूमिका की जांच करता है। हिंदू बहुल राज्य होने के बावजूद, उत्तराखंड में मुस्लिम, सिख, ईसाई और बौद्ध सहित कई धार्मिक अल्पसंख्यक रहते हैं। अध्ययन में पता लगाया गया है कि ये समुदाय किस तरह से क्षेत्र की राजनीतिक गतिशीलता को आकार देते हैं और किस तरह से प्रभावित होते हैं। जनसांख्यिकीय डेटा, चुनावी रुझानों और राजनीतिक प्रतिनिधित्व के विश्लेषण के माध्यम से, यह शोधपत्र उत्तराखंड की चुनावी राजनीति में धार्मिक अल्पसंख्यकों के महत्व और क्षेत्रीय और राष्ट्रीय राजनीतिक रणनीतियों के लिए व्यापक निहितार्थों को समझने का प्रयास करता है।

**कूजी शब्द** उत्तराखंड, धार्मिक अल्पसंख्यक, पहचान की राजनीति, मुस्लिम, सिख, ईसाई

#### प्रस्तावना :

उत्तराखंड, भारत का एक उत्तरी राज्य है जो अपने प्राकृतिक सौंदर्य और समृद्ध सांस्कृतिक विरासत के लिए जाना जाता है, यह धार्मिक विविधता का एक अनूठा उधारण है। अपनी प्रमुख हिंदू आबादी के बावजूद, राज्य में मुस्लिम, ईसाई, सिख और बौद्ध

सहित कई धार्मिक अल्पसंख्यक रहते हैं। ये समुदाय, हालांकि संख्यात्मक रूप से छोटे हैं, लेकिन क्षेत्र के सामाजिक—: सांस्कृतिक और राजनीतिक ताने—:बाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

उत्तराखंड का राजनीतिक परिदृश्य इसकी धार्मिक संरचना द्वारा महत्वपूर्ण रूप से आकार लेता रहा है। राजनीति में धार्मिक अल्पसंख्यकों की भागीदारी और प्रभाव ऐतिहासिक संदर्भों, सामाजिक—:आर्थिक कारकों और बदलती राजनीतिक गतिशीलता से प्रभावित होकर समय के साथ विकसित हुआ है। राज्य के राजनीतिक माहौल के व्यापक विश्लेषण के लिए इन अल्पसंख्यकों की भूमिका को समझना आवश्यक है।

**अनुसंधान विधि**

इस अध्ययन में उत्तराखंड के राजनीतिक परिदृश्य में धार्मिक अल्पसंख्यकों की भूमिका की जांच करने के लिए मात्रात्मक दृष्टिकोण का उपयोग किया गया है। पिछले दो दशकों के चुनावी डेटा, जिन्हें भारत के चुनाव आयोग और राज्य चुनाव आयोग की वेबसाइट से प्राप्त किया गया था, का सांख्यिकीय उपकरणों का उपयोग करके विश्लेषण किया गया ताकि मतदान पैटर्न और चुनाव परिणामों पर अल्पसंख्यक समुदायों के प्रभाव की पहचान की जा सके। धार्मिक अल्पसंख्यकों के वितरण को मैप करने के लिए २०११ की जनगणना के जनसांख्यिकीय डेटा का उपयोग किया गया था, और संदर्भ प्रदान करने के लिए साक्षरता दर, आय स्तर और रोजगार सांख्यिकी जैसे सामाजिक—:आर्थिक संकेतकों का विश्लेषण किया गया था। अल्पसंख्यकों की उपस्थिति और चुनावी परिणामों के बीच सहसंबंधों का पता लगाने के लिए प्रतिगमन विश्लेषण किया गया।

### धार्मिक अल्पसंख्यकों की परिभाषा और महत्व

उत्तराखंड में धार्मिक अल्पसंख्यकों में मुस्लिम, सिख, ईसाई, बौद्ध और जैन शामिल हैं। भारत की २०११ की जनगणना के अनुसार, हिंदू बहुसंख्यक हैं, जबकि मुसलमान सबसे बड़ा अल्पसंख्यक समूह हैं, उसके बाद सिख और ईसाई हैं। उत्तराखंड में मुस्लिम १३.९५% सिख २.३४% ईसाई ०.३७ % बौद्ध — ०.०४% जैन: ०.०९% हैं।

ये अल्पसंख्यक समुदाय अपनी अनूठी परंपराओं, प्रथाओं और दृष्टिकोणों को लेकर राज्य के सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक ताने—:बाने में योगदान करते हैं।

### उत्तराखंड में धार्मिक अल्पसंख्यकों का महत्व बहुआयामी है—:

१. सांस्कृतिक विविधता—: धार्मिक अल्पसंख्यकों की उपस्थिति उत्तराखंड के सांस्कृतिक परिदृश्य को समृद्ध करती है तथा बहुलवाद और सहिष्णुता की भावना को बढ़ावा देती है।

२. आर्थिक योगदान—: अल्पसंख्यक समुदाय कृषि, व्यापार और सेवाओं सहित विभिन्न आर्थिक गतिविधियों में शामिल हैं, जो राज्य के समग्र विकास में योगदान दे रहे हैं।

३. सामाजिक एकीकरण—:विभिन्न धार्मिक समुदायों के बीच परस्पर क्रिया सामाजिक सामंजस्य और आपसी सम्मान को बढ़ावा देती है, जो राज्य की सद्भावना के लिए आवश्यक है।

४. राजनीतिक प्रतिनिधित्व —: धार्मिक अल्पसंख्यकों के लिए पर्याप्त राजनीतिक प्रतिनिधित्व सुनिश्चित करना एक समावेशी लोकतांत्रिक प्रक्रिया को बनाए रखने और उनकी विशिष्ट आवश्यकताओं और चिंताओं को दूर करने के लिए महत्वपूर्ण है।

उत्तराखंड के राजनीतिक परिदृश्य में धार्मिक अल्पसंख्यकों की भूमिका को समझने के लिए राज्य की राजनीति में उनकी भागीदारी और प्रभाव की जांच करना, साथ ही राजनीतिक लामबंदी और प्रतिनिधित्व हासिल करने में उनके सामने आने वाली चुनौतियों की जांच करना शामिल है। यह विश्लेषण भारत में अल्पसंख्यक राजनीति की व्यापक गतिशीलता और अधिक समावेशी राजनीतिक माहौल बनाने के लिए चल रहे प्रयासों के बारे में जानकारी प्रदान करता है।

### साहित्य समीक्षा

उत्तराखंड की राजनीति में अल्पसंख्यकों की भागीदारी को समझने के लिए सार्वजनिक वस्तुओं, पहचान की राजनीति और सार्वजनिक संस्थानों के प्रदर्शन की राजनीतिक अर्थव्यवस्था की जांच करना शामिल है। यह समीक्षा उत्तराखंड के राजनीतिक परिदृश्य में अल्पसंख्यकों की भूमिकाओं को प्रासंगिक

बनाने के लिए मौजूदा साहित्य से अंतर्दृष्टि को संश्लेषित करती है। बनर्जी और सोमनाथन (२००७) इस बात पर प्रकाश डालते हैं कि भारत में सार्वजनिक वस्तुओं के वितरण पर राजनीतिक विचार कैसे प्रभाव डालते हैं, जो अक्सर हाशिए पर पड़े समूहों को नुकसान पहुँचाते हैं। यह ढाँचा उत्तराखंड में संसाधनों और राजनीतिक शक्ति के वितरण को समझने के लिए महत्वपूर्ण है, जहाँ अल्पसंख्यकों को समान असमानताओं का सामना करना पड़ता है। चंद्रा (२००४) संरक्षण नेटवर्क और जातीय प्रमुख गणना के माध्यम से जातीय और जाति—आधारित दलों की सफलता की व्याख्या करते हैं। उत्तराखंड में, जाति और जातीय पहचान राजनीतिक लामबंदी को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित करती है। गुप्ता (२००५) और बेतेली (२०००) जाति पहचान की तरल और संदर्भ—निर्भर प्रकृति पर चर्चा करते हैं, यह समझाने में मदद करते हैं कि अल्पसंख्यक अपने राजनीतिक जुड़ाव को कैसे नेविगेट करते हैं। कपूर और मेहता (२००५) भारत में सार्वजनिक संस्थानों की प्रभावशीलता की जांच करते हैं, भ्रष्टाचार और अकुशलता जैसे मुद्दों पर ध्यान देते हैं जो अल्पसंख्यकों की भागीदारी में बाधा डालते हैं। ऐंकिंस और क्रेन (२०१०) पता लगाते हैं कि कैसे सार्वजनिक अधिकारी नागरिक—केंद्रित शासन को बाधित कर सकते हैं, जो उत्तराखंड में अल्पसंख्यकों द्वारा सामना की जाने वाली नौकरशाही चुनौतियों को समझने के लिए प्रासंगिक है। यादव (२०००) १९९० के दशक की चुनावी राजनीति में हाशिए पर पड़े समूहों की बढ़ती भागीदारी का विश्लेषण करते हैं। यह प्रवृत्ति, जिसे “दूसरा लोकतांत्रिक उभार” कहा जाता है, उत्तराखंड में अल्पसंख्यकों की राजनीतिक भागीदारी के विकास में अंतर्दृष्टि प्रदान करती है। जाफरलॉट (२००३) और मेंडेलसोहन और विजियानी (१९९८) निचली जातियों के उत्थान और अछूतों के सामाजिक—आर्थिक संघर्षों पर ऐतिहासिक संदर्भ प्रदान करते हैं, जो राजनीतिक सशक्तिकरण में चल रही चुनौतियों और प्रगति पर प्रकाश डालते हैं। भार्गव (२००६) भारत में राजनीतिक सिद्धांत पर एक व्यापक सैद्धांतिक रूपरेखा प्रस्तुत करते हैं, जो लोकतंत्र और न्याय पर केंद्रित है।

उत्तराखंड की राजनीति में अल्पसंख्यकों की भागीदारी के मानक पहलुओं को तैयार करने के लिए ये अंतर्दृष्टि आवश्यक हैं।

### धार्मिक अल्पसंख्यकों की ऐतिहासिक राजनीतिक भागीदारी

प्रारंभिक राजनीतिक भागीदारी — ब्रिटिश औपनिवेशिक काल के दौरान, कुछ धार्मिक अल्पसंख्यक समुदाय स्थानीय शासन और ट्रेड यूनियनों में शामिल थे। उनकी राजनीतिक भागीदारी अक्सर समुदाय के नेताओं द्वारा आकार लेती थी जो अधिकारों और प्रतिनिधित्व की वकालत करते थे।

स्वतंत्रता— काल— १९४७ में भारत को स्वतंत्रता मिलने के बाद, इस क्षेत्र में धार्मिक अल्पसंख्यक स्थानीय राजनीति में शामिल रहे, हालांकि उनकी भागीदारी सामाजिक—आर्थिक बाधाओं और बहुसंख्यक हिंदू आबादी के प्रभुत्व वाली राजनीतिक गतिशीलता के कारण सीमित थी।

सामुदायिक संगठन और वकालत— धार्मिक अल्पसंख्यकों के हितों का प्रतिनिधित्व करने के लिए विभिन्न समुदाय—आधारित संगठन उभरे। इन संगठनों ने सामाजिक— आर्थिक विकास और राजनीतिक प्रतिनिधित्व की वकालत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

चुनावी भागीदारी—धार्मिक अल्पसंख्यकों ने चुनावों में भाग लिया, लेकिन निर्वाचित निकायों में उनका प्रतिनिधित्व अपेक्षाकृत कम था। उन्हें अक्सर प्रमुख राजनीतिक दलों द्वारा वोट बैंक के रूप में देखा जाता था, जो चुनावों के दौरान उनका समर्थन करते थे, लेकिन हमेशा उनकी विशिष्ट जरूरतों और मुद्दों को संबोधित नहीं करते थे।

संक्षेप में, उत्तराखंड में राज्य बनने से पहले की अवधि में धार्मिक अल्पसंख्यकों ने राजनीतिक प्रतिनिधित्व और लामबंदी में चुनौतियों का सामना करने के बावजूद क्षेत्र के सामाजिक—आर्थिक ताने—बाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया। उनके बसने के तरीके और ऐतिहासिक राजनीतिक भागीदारी ने राज्य बनने के बाद विकसित हो रहे राजनीतिक परिदृश्य की नींव रखी।

वर्ष २००० में उत्तराखंड के अलग राज्य बनने से पहले यह उत्तर प्रदेश के बड़े राज्य का हिस्सा

था। धार्मिक अल्पसंख्यकों की जनसांख्यिकी और बसावट के तरीके, साथ ही उनकी ऐतिहासिक राजनीतिक भागीदारी, इस क्षेत्र के अद्वितीय सामाजिक—सांस्कृतिक परिदृश्य को दर्शाती है।

### जनसांख्यिकी

उत्तराखंड में हिंदू हमेशा से बहुसंख्यक रहे हैं, लेकिन मुस्लिम, सिख, ईसाई और बौद्ध जैसे धार्मिक अल्पसंख्यकों ने भी उल्लेखनीय समुदाय स्थापित किए हैं।

**१. मुस्लिम—:** मुस्लिम आबादी पारंपरिक रूप से शहरी क्षेत्रों और ग्रामीण क्षेत्रों के कुछ हिस्सों में केंद्रित रही है। उत्तराखंड में कुल मुस्लिमों का ७१.१: ग्रामीण इलाकों में और २८.९% शहरी इलाकों में निवास करते हैं। उत्तराखंड में मुस्लिम मुख्य रूप से हरिद्वार उधम सिंह नगर देहरादून और नैनीताल जिलों में रहते हैं। काशीपुर हल्द्वानी, देहरादून और रुड़की जैसे शहरों में मुस्लिम आबादी काफी है। ये समुदाय अक्सर व्यापार, कारीगरी और छोटे पैमाने के उद्योगों में लगे रहते हैं।

**२. सिख—:** तराई क्षेत्र में सिखों की अच्छी खासी मौजूदगी है, उत्तराखंड के ७०.७% सिख गाँव में और २९.३% सिख शहरों में रहते हैं। खास तौर पर उधम सिंह नगर और नैनीताल जैसे इलाकों में। इस क्षेत्र में उनकी बसावट विभाजन के बाद के दौर से शुरू हुई, जब पंजाब से कई सिख शरणार्थियों को उपजाऊ तराई के मैदानों में बसाया गया, जिससे कृषि विकास में योगदान मिला।

**३. ईसाई—** ईसाई आबादी, हालांकि तुलनात्मक रूप से छोटी है, उत्तराखंड की जनगणना २०११ के अनुसार उत्तराखंड में कुल ईसाई —८,३६८६३६ हैं जिनमें से ७२.१% ग्रामीण इलाकों में और २७.९% शहरी क्षेत्रों में निवास करते हैं। ब्रिटिश काल के दौरान मिशनरी गतिविधियों ने ईसाई समुदायों की स्थापना की, विशेष रूप से शैक्षिक और स्वास्थ्य सेवा क्षेत्रों में। मसूरी और देहरादून जैसे शहरों में स्थित संस्थानों का इन मिशनों से ऐतिहासिक संबंध है।

**४. बौद्ध—:** बौद्ध एक छोटा समूह है, जिसकी उपस्थिति मुख्य रूप से तिब्बती शरणार्थियों के रूप में है जो १९५९ के तिब्बती विद्रोह के बाद इस क्षेत्र में

बस गए थे। वे देहरादून जैसे स्थानों पर केंद्रित हैं, जहाँ कई तिब्बती बस्तियाँ और मठ हैं। उत्तराखंड में बौद्ध धर्म के ७३.५% अनुयायी २६.५% शहरी क्षेत्रों में निवास करते हैं।

### ऐतिहासिक राजनीतिक भागीदारी

ऐतिहासिक रूप से इस क्षेत्र में धार्मिक अल्पसंख्यकों की राजनीतिक भागीदारी अलग—अलग स्तर पर रही है।

**१. मुस्लिम—:** उनकी राजनीतिक भागीदारी अक्सर क्षेत्रीय राजनीति के बजाय व्यापक राज्य की राजनीति में भागीदारी के माध्यम से रही है। अल्पसंख्यक के रूप में, उन्होंने भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस और बाद में बहुजन समाज पार्टी (बीएसपी) जैसे प्रमुख राजनीतिक दलों के माध्यम से प्रतिनिधित्व मांगा है, जिन्होंने अल्पसंख्यक मुद्दों को संबोधित करने का वादा किया था।

**२. सिख—:** तराई क्षेत्र में सिख समुदाय की राजनीतिक भागीदारी महत्वपूर्ण रही है। वे स्थानीय राजनीति, खासकर कृषि और व्यापार संघों में प्रभावशाली रहे हैं। राजनीतिक प्रतिनिधित्व अक्सर क्षेत्रीय दलों और बड़े राज्य और राष्ट्रीय दलों के साथ गठबंधन के माध्यम से आता है।

**३. ईसाई—:** ईसाई समुदाय की राजनीतिक भागीदारी काफी हद तक अप्रत्यक्ष रही है, जो शिक्षा और स्वास्थ्य सेवा जैसे सामाजिक मुद्दों पर केंद्रित है। उनका राजनीतिक प्रतिनिधित्व सीमित रहा है, लेकिन वे नागरिक समाज में सक्रिय रहे हैं, अपने संस्थानों का उपयोग वकालत के लिए मंच के रूप में करते हैं।

**४. बौद्ध—:** तिब्बती बौद्ध शरणार्थी होने के कारण, औपचारिक राजनीतिक भागीदारी सीमित रखते हैं। हालाँकि, उन्होंने एक अलग सांस्कृतिक और सामाजिक पहचान बनाए रखी है, जिसका नेतृत्व अक्सर शरणार्थी अधिकारों और निपटान से संबंधित मुद्दों पर भारत सरकार के साथ बातचीत करता है।

कुल मिलाकर, उत्तराखंड के धार्मिक अल्पसंख्यकों ने व्यापक राजनीतिक परिदृश्य में अपनी अलग पहचान कायम करते हुए इसके सामाजिक—आर्थिक ढाँचे में योगदान दिया है। उनकी भागीदारी स्थानीय गतिशीलता और व्यापक राज्य और राष्ट्रीय

राजनीति दोनों द्वारा आकार लेती रही है, जो सामुदायिक हितों और क्षेत्रीय विकास के जटिल अंतर्संबंध को दर्शाती है।

### उत्तराखंड में राज्यत्व के बाद के घटनाक्रम

वर्ष २००० में राज्य का दर्जा प्राप्त करने के बाद से उत्तराखंड में महत्वपूर्ण राजनीतिक और सामाजिक परिवर्तन हुए हैं। इन परिवर्तनों ने राजनीतिक माहौल और धार्मिक अल्पसंख्यकों की भागीदारी और प्रतिनिधित्व को विभिन्न तरीकों से प्रभावित किया है।

### राजनीतिक माहौल में बदलाव

**१. राजनीतिक परिदृश्य—:** उत्तराखंड में एक प्रतिस्पर्धी राजनीतिक माहौल देखा गया है, जिसमें मुख्य रूप से भारतीय जनता पार्टी (बीजेपी) और भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस (आईएनसी) का दबदबा रहा है। दोनों ही पार्टियाँ बारी-बारी से सत्ता में आई हैं, हाल के वर्षों में बीजेपी का प्रभाव ज्यादा रहा है। राजनीतिक परिदृश्य में क्षेत्रीय विकास, बुनियादी ढाँचे और प्रवासन और पर्यावरण संरक्षण जैसे स्थानीय मुद्दों पर ध्यान केंद्रित किया जाता है।

**२. प्रशासनिक सुधार—:** नए राज्य के निर्माण के बाद प्रशासनिक पुनर्गठन हुआ जिसका उद्देश्य बेहतर प्रशासन और विकास था। सरकार ने आर्थिक विकास, पर्यटन और शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए कई योजनाएं शुरू की हैं, जिससे अल्पसंख्यकों सहित विभिन्न समुदायों को लाभ मिला है।

**३. शहरीकरण और विकास—:** बुनियादी ढाँचे, शहरीकरण और पर्यटन में महत्वपूर्ण निवेश ने कई कस्बों और शहरों को बदल दिया है। राज्य की राजधानी देहरादून शिक्षा और आईटी का केंद्र बन गया है, जो विविध आबादी को आकर्षित करता है और विभिन्न समुदायों के लिए नए अवसर पैदा करता है।

**समग्र प्रभाव :** उत्तराखंड में राज्य बनने के बाद की अवधि में एक गतिशील राजनीतिक माहौल रहा है, जिसमें धार्मिक अल्पसंख्यकों के लिए चुनौतियाँ और अवसर दोनों हैं। प्रतिनिधित्व हासिल करने और समुदाय-विशिष्ट मुद्दों को संबोधित करने के प्रयासों में वृद्धि के साथ उनकी राजनीतिक भागीदारी विकसित हुई है। जबकि अल्पसंख्यकों को अभी भी आनुपातिक

प्रतिनिधित्व हासिल करने में चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है, राजनीतिक प्रक्रियाओं और नागरिक समाज में उनकी भागीदारी ने राज्य में अधिक समावेशी और विविध सामाजिक-राजनीतिक परिदृश्य में योगदान दिया है।

### धार्मिक अल्पसंख्यकों की राजनीतिक भागीदारी

#### A. चुनावी भागीदारी

#### धार्मिक अल्पसंख्यकों के बीच मतदान पैटर्न

#### १. मुस्लिम—:

**ऐतिहासिक संदर्भ—:** ऐतिहासिक रूप से, उत्तराखंड में मुसलमान धर्मनिरपेक्षता और अल्पसंख्यक अधिकारों की वकालत करने वाली पार्टियों के साथ जुड़े रहे हैं। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस अक्सर अपनी समावेशी नीतियों के कारण पसंदीदा विकल्प रही है।

**राज्य बनने के बाद के रुझान—:** राज्य बनने के बाद से, मतदान पैटर्न में कुछ बदलाव देखने को मिले हैं, जिसमें मुस्लिम मतदाताओं का एक हिस्सा क्षेत्रीय दलों या स्थानीय मुद्दों पर ध्यान केंद्रित करने वाले उम्मीदवारों का समर्थन करता है। हालांकि, कांग्रेस मुस्लिम वोटों का एक महत्वपूर्ण प्राप्तकर्ता बनी हुई है। समुदाय उन क्षेत्रों में एकजुट होकर मतदान करता है जहां उनकी पर्याप्त उपस्थिति है।

#### २. सिख—:

उनके हितों के अनुकूल आर्थिक विकास और कृषि नीतियों को बढ़ावा देते हैं।

**राज्य बनने के बाद के रुझान—:** भारतीय जनता पार्टी (बीजेपी) और शिरोमणि अकाली दल (पंजाब में बीजेपी की सहयोगी) को तराई क्षेत्र में सिख समुदाय से काफी समर्थन मिला है। सिखों ने कांग्रेस को भी समर्थन दिया है, खासकर उन इलाकों में जहां विकास और स्थानीय मुद्दे प्रमुख हैं।

#### ३. ईसाई—:

**ऐतिहासिक संदर्भ—:** उत्तराखंड में ईसाई अल्पसंख्यक, जो संख्या में कम हैं, अक्सर धर्मनिरपेक्ष और प्रगतिशील मूल्यों को बनाए रखने वाली पार्टियों की ओर झुकाव रखते हैं, जिनमें कांग्रेस उनकी पसंदीदा पसंद है।

**राज्य बनने के बाद के रुझान—:** ईसाई

कांग्रेस और अन्य धर्मनिरपेक्ष दलों का समर्थन करना जारी रखते हैं, खासकर शहरी क्षेत्रों में जहां उनके शैक्षणिक और स्वास्थ्य संस्थान महत्वपूर्ण हैं। उनका मतदान पैटर्न अल्पसंख्यक अधिकारों और सामाजिक न्याय के बारे में चिंताओं को दर्शाता है।

#### ४. बौद्ध—:

**ऐतिहासिक संदर्भ—:** तिब्बती बौद्ध समुदाय, जिसमें मुख्य रूप से शरणार्थी शामिल हैं, अपनी स्थिति के कारण प्रत्यक्ष चुनावी भागीदारी सीमित रखते हैं। हालांकि, वे वकालत करते हैं और अपने मुद्दों के प्रति सहानुभूति रखने वाले दलों और उम्मीदवारों का समर्थन करते हैं।

**राज्य बनने के बाद के रुझान—:** जबकि प्रत्यक्ष मतदान सीमित है, समुदाय शरणार्थियों के कल्याण और सांस्कृतिक संरक्षण के पक्षधर पहलों और उम्मीदवारों का समर्थन करता है। वे कम चुनावी प्रोफाइल रखते हैं लेकिन नागरिक मामलों में सक्रिय हैं।

**राज्य विधान सभा और स्थानीय शासन में अल्पसंख्यक प्रतिनिधित्व**

#### १. राज्य विधान सभा—:

**मुस्लिम—:** उत्तराखंड विधानसभा में मुस्लिम प्रतिनिधित्व मामूली लेकिन मौजूद रहा है। पिछले कुछ सालों में, कुछ मुस्लिम विधायक चुने गए हैं, मुख्य रूप से शहरी निर्वाचन क्षेत्रों से, जहां मुस्लिम आबादी काफी है। उत्तराखंड की आबादी करीब १०,०८६,२९२ है और राज्य में ७० विधानसभा और पांच लोकसभा सीटें हैं। मुस्लिम मतदाताओं की संख्या करीब १४ है, खासकर हरिद्वार, देहरादून, उधम सिंह नगर और नैनीताल में, जहां मुस्लिम मतदाता निर्णायक भूमिका निभा सकते हैं। हालांकि, जब बात मुस्लिम नेताओं को टिकट मिलने और विधायक बनने की आती है, तो यह संख्या काफी कम है। उत्तराखंड में अब तक हुए सभी विधानसभा चुनावों में मुसलमानों को सिर्फ दो या तीन सीटें ही मिली हैं और पांच लोकसभा सीटों में से एक भी सीट पर मुसलमान नहीं जीतते। यह मुस्लिम समुदाय की बेहद चिंताजनक स्थिति को दर्शाता है। राज्य की आबादी में मुसलमानों की हिस्सेदारी लगभग १४% है, लेकिन विधानसभा में उनका प्रतिनिधित्व

सिर्फ २% से ३% है, जो चिंता का विषय है।

**सिख—** तराई क्षेत्र में सिखों का प्रतिनिधित्व ज्यादा रहा है, जो उनकी जनसांख्यिकीय ताकत को दर्शाता है। उधम सिंह नगर और नैनीताल जैसे क्षेत्रों में सिख उम्मीदवार सफल रहे हैं। उत्तराखंड में सिख समुदाय की राजनीतिक स्थिति पर नजर डालें तो यह काफी सीमित नजर आती है। अब तक राज्य में दो सिख राज्यपाल रह चुके हैं और वर्तमान में कर्नल गुरमीत सिंह राज्यपाल का पद संभाल रहे हैं। इसके अलावा काशीपुर सीट से सिख समुदाय के बीजेपी के उमीदवार त्रिलोक सिंह चीमा विधायक है। उत्तराखंड में सिख समुदाय की आबादी काफी है, खासकर देहरादून, हरिद्वार, उधम सिंह नगर और नैनीताल जैसे जिलों में। इसके बावजूद राज्य की राजनीति में उनका प्रतिनिधित्व काफी कम है। यह स्थिति इस समुदाय के राजनीतिक हाशिए पर होने की ओर इशारा करती है।

**ईसाई—:** राज्य विधानसभा में ईसाइयों का प्रतिनिधित्व बहुत कम रहा है, जिसका मुख्य कारण उनकी छोटी आबादी है। हालांकि, कभी—कभी स्थानीय ईसाई नेता चुने जाते रहे हैं, जिनका ध्यान शहरी निर्वाचन क्षेत्रों पर केंद्रित रहा है।

**बौद्ध—** तिब्बती बौद्धों को शरणार्थी होने के कारण विधान सभा में प्रतिनिधित्व नहीं मिलता है। हालांकि, कभी—कभी सहानुभूति रखने वाले विधायकों द्वारा उनके मुद्दों को संबोधित किया जाता है।

कुल मिलाकर, उत्तराखंड में धार्मिक अल्पसंख्यकों की राजनीतिक भागीदारी उनकी जनसांख्यिकीय उपस्थिति और सामाजिक—आर्थिक भूमिकाओं को दर्शाती है। जबकि चुनौतियाँ बनी हुई हैं, विशेष रूप से आनुपातिक प्रतिनिधित्व हासिल करने में, चुनावी प्रक्रियाओं और स्थानीय शासन में उनकी भागीदारी राज्य के राजनीतिक ताने—बाने का अभिन्न अंग रही है।

**राजनीतिक दल और अल्पसंख्यक प्रतिनिधित्व अल्पसंख्यक उम्मीदवारों को बढ़ावा देने में प्रमुख राजनीतिक दलों की भूमिका**

#### १. भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस (आईएनसी)—:

**ऐतिहासिक समर्थन—:** कांग्रेस ने ऐतिहासिक

रूप से स्वयं को एक धर्मनिरपेक्ष और समावेशी पार्टी के रूप में स्थापित किया है, तथा अल्पसंख्यक अधिकारों और सामाजिक न्याय की वकालत के कारण मुस्लिमों और ईसाइयों सहित धार्मिक अल्पसंख्यकों से समर्थन प्राप्त किया है।

#### अल्पसंख्यक उम्मीदवारों का प्रचार—:

कांग्रेस ने राज्य और राष्ट्रीय दोनों स्तरों पर चुनावों में अल्पसंख्यक उम्मीदवारों को सक्रिय रूप से बढ़ावा दिया है। इसने जहाँ संभव हो अल्पसंख्यक हितों की बात की है परंतु कांग्रेस जो की सेक्युलर पार्टी मानी जाती है ने भी हरिद्वार के अतिरिक्त अन्य किसी भी विधान सभा से किसी अल्पसंख्यक समुदाय को टिकट नहीं दिया। केवल वोट बैंक की राजनीति की है।

#### २. भारतीय जनता पार्टी (भाजपा)—

भाजपा ने धार्मिक अल्पसंख्यकों, खासकर सिखों और बौद्धों तक पहुंचने के प्रयास किए हैं, जिसमें विकास और समावेशिता पर जोर दिया गया है। इसने खुद को सभी समुदायों की पार्टी के रूप में पेश करने की कोशिश की है, चाहे वह किसी भी धर्म का हो। यथार्थ में देखा जाए तो वर्तमान में बीजेपी के ४०० सांसद और १३०० से ज्यादा विधायक हैं परंतु उनमें से एक भी मुस्लिम नहीं है।

#### अल्पसंख्यक उम्मीदवारों का प्रचार—:

जबकि भाजपा की चुनावी रणनीति अक्सर अल्पसंख्यक विशिष्ट चिंताओं के बजाय व्यापक मुद्दों पर केंद्रित रही है, इसने अल्पसंख्यक आबादी वाले निर्वाचन क्षेत्रों में अल्पसंख्यक उम्मीदवारों को मैदान में उतारा है। हालाँकि, भाजपा द्वारा मैदान में उतारे गए अल्पसंख्यक उम्मीदवारों की संख्या आम तौर पर कांग्रेस की तुलना में कम रही है। बीजेपी ने हिन्दुत्व धुरविकरण की राजनीति की है।

अल्पसंख्यक नेतृत्व वाले राजनीतिक दलों या गुटों की उपस्थिति और प्रभाव

#### १. अल्पसंख्यक समर्थन वाली क्षेत्रीय पार्टियाँ—:

उत्तराखंड में कुछ क्षेत्रीय दल हैं जिन्होंने विशिष्ट अल्पसंख्यक समुदायों से समर्थन हासिल किया है।

उदाहरण—: बहुजन समाज पार्टी (बीएसपी) जैसी पार्टियों ने सामाजिक न्याय और अल्पसंख्यक

अधिकारों की वकालत करके मुसलमानों और अन्य हाशिए पर पड़े समुदायों का समर्थन हासिल किया है। इसी तरह, उत्तराखंड क्रांति दल (यूकेडी) जैसी मजबूत क्षेत्रीय आधार वाली पार्टियों ने अल्पसंख्यक नेताओं को शामिल किया है और समर्थन हासिल करने के लिए समुदाय—:विशिष्ट मुद्दों को संबोधित किया है। राज्य की नीतियों और कानून पर धार्मिक अल्पसंख्यकों का प्रभाव

उत्तराखंड में धार्मिक अल्पसंख्यक चुनावी भागीदारी, वकालत और सहयोग के माध्यम से राज्य की नीतियों और कानूनों को आकार देते हैं—

#### १. सामाजिक कल्याण नीतियां—

##### समावेशी विकास कार्यक्रम—:

वकालत के कारण हाशिए पर पड़े समूहों के लिए शिक्षा, स्वास्थ्य देखभाल और आजीविका पर ध्यान केंद्रित करने वाली कल्याणकारी योजनाएं बनाई गई हैं।

#### २. धार्मिक स्वतंत्रता और सद्भाव—:

##### अल्पसंख्यक अधिकारों का संरक्षण—:

सक्रियता ने भेदभाव और सांप्रदायिक हिंसा के विरुद्ध सुरक्षा के लिए कानून बनाने को प्रेरित किया है।

##### अंतर—धार्मिक संवाद और सद्भाव—:

सहयोगात्मक पहल सहिष्णुता और आपसी सम्मान को बढ़ावा देती है।

#### ३. शैक्षिक एवं सांस्कृतिक संरक्षण—:

##### अल्पसंख्यक भाषाओं और संस्कृतियों का संरक्षण—:

वकालत ने भाषा शिक्षा और सांस्कृतिक संरक्षण का समर्थन करने वाली नीतियों को प्रभावित किया है।

##### अल्पसंख्यक संस्थानों को बढ़ावा—:

राज्य की नीतियां अल्पसंख्यकों द्वारा स्थापित शैक्षणिक और स्वास्थ्य देखभाल संस्थानों को मान्यता देती हैं और उनका समर्थन करती हैं।

#### ४. आर्थिक सशक्तिकरण और आजीविका के अवसर—

##### उद्यमिता और कौशल विकास—:

नीतियां अल्पसंख्यक युवाओं के लिए उद्यमिता और कौशल विकास को बढ़ावा देती हैं।

अल्पसंख्यक स्वामित्व वाले व्यवसायों के लिए समर्थन— अल्पसंख्यक स्वामित्व वाले उद्यमों के लिए प्रोत्साहन और समर्थन समावेशी विकास को बढ़ावा देते हैं।

### सामाजिक और सांस्कृतिक प्रभाव

उत्तराखंड के सामाजिक— सांस्कृतिक परिदृश्य में धार्मिक अल्पसंख्यकों का योगदान

धार्मिक अल्पसंख्यक निम्नलिखित माध्यमों से उत्तराखंड की विविधता और सद्भाव को बढ़ाते हैं—

#### १. शिक्षा और स्वास्थ्य देखभाल—:

##### संस्थाओं की स्थापना—:

अल्पसंख्यकों द्वारा स्थापित स्कूल और व्यावसायिक केंद्र गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करते हैं।  
**स्वास्थ्य सेवाएं—:**

अल्पसंख्यकों द्वारा संचालित स्वास्थ्य सुविधाएं, विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में, चिकित्सा सेवाओं तक पहुंच में सुधार करती हैं।

#### २. सांस्कृतिक संरक्षण—:

कला और संस्कृति को बढ़ावा—: अल्पसंख्यकों द्वारा आयोजित उत्सव और कार्यक्रम कला, संगीत, नृत्य और साहित्य को बढ़ावा देते हैं।

#### विरासत स्थलों का संरक्षण—:

अल्पसंख्यक प्रयास सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित करते हैं और पर्यटन को आकर्षित करते हैं।

#### ३. सामाजिक कल्याण और सामुदायिक विकास—: सामुदायिक सेवा पहल—:

अल्पसंख्यक नेतृत्व वाली गतिविधियाँ कमजोर समूहों को सहायता प्रदान करती हैं और सामाजिक सामंजस्य को बढ़ावा देती हैं।

#### सशक्तिकरण कार्यक्रम—:

कार्यक्रम हाशिए पर पड़े समूहों के लिए सामाजिक—:आर्थिक सशक्तिकरण और समावेशिता को बढ़ावा देते हैं।

#### राजनीतिक लामबंदी और प्रतिनिधित्व में चुनौतियाँ

##### A. संरचनात्मक बाधाएं

##### १. चुनावी प्रणाली की चुनौतियाँ—:

फर्स्ट पास्ट द पोस्ट प्रणाली प्रमुख पार्टियों को लाभ पहुंचाती है, तथा अल्पसंख्यक उम्मीदवारों

के लिए बाधाएं उत्पन्न करती हैं।

**गेरीमैडरिंग** से अल्पसंख्यक आबादी बिखर जाती है, जिससे उनके चुनावी प्रभाव में बाधा उत्पन्न होती है।

**विजेता—:सभी—:लेता** है सिद्धांत महत्वपूर्ण समर्थन वाले अल्पसंख्यक उम्मीदवारों को हाशिए पर डाल देता है।

#### २. पार्टी डायनेमिक्स—:

प्रमुख पार्टियां संसाधनों और संपर्क वाले उम्मीदवारों को प्राथमिकता देती हैं, जिससे अल्पसंख्यकों को नुकसान होता है।

केंद्रीकृत उम्मीदवार चयन जमीनी स्तर के उम्मीदवारों के लिए अवसरों को सीमित करता है।

प्रतीकात्मकता, वास्तविक सशक्तीकरण के बिना प्रतीकात्मक प्रतिनिधित्व प्रदान कर सकती है।

#### सामाजिक—: आर्थिक चुनौतियाँ

##### १. संसाधन असमानता—:

अल्पसंख्यक उम्मीदवारों के पास प्रभावी अभियान के लिए संसाधनों की कमी होती है, जिससे उनकी प्रतिस्पर्धात्मकता सीमित हो जाती है।

संरक्षण राजनीति पर निर्भरता स्वतंत्र सक्रियता और वकालत को कम करती है।

#### २. शैक्षिक और सामाजिक बाधाएं—:

शैक्षिक असमानताएं राजनीतिक भागीदारी और वकालत की प्रभावशीलता में बाधा डालती हैं।

भाषा संबंधी बाधाएं सूचना तक पहुंच और राजनीति में भागीदारी में बाधा डालती हैं।

सामाजिक बहिष्कार और भेदभाव राजनीतिक भागीदारी और असहमति को रोकते हैं।

#### भेदभाव और हाशिए पर डालना

##### १. धार्मिक भेदभाव—:

उम्मीदवार चयन में पक्षपात और शासन में हाशिए पर डाल दिए जाने के कारण अल्पसंख्यकों का प्रतिनिधित्व कम होता है।

मतदाता दमन की रणनीति और धार्मिक ध्वीकरण अल्पसंख्यकों के लोकतांत्रिक अधिकारों को कमजोर करते हैं।

**२. सांप्रदायिक तनाव का प्रभाव—:**

प्रतिशोध और चुनावी प्रक्रिया में व्यवधान का भय अल्पसंख्यकों की राजनीतिक लामबंदी को सीमित करता है।

विभाजनकारी राजनीतिक आख्यान सांप्रदायिक तनाव और अल्प प्रतिनिधित्व को बढ़ाते हैं।

**बेहतर प्रतिनिधित्व के लिए रणनीतियाँ**

**चुनावी सुधार—:** अल्पसंख्यक प्रतिनिधित्व बढ़ाने के लिए आनुपातिक प्रतिनिधित्व या निर्वाचन क्षेत्र परिसीमन सुधारों को लागू करना।

**पार्टी सुधार—:** पार्टियों में आंतरिक लोकतंत्र को बढ़ावा देना और पारदर्शी उम्मीदवार चयन प्रक्रिया सुनिश्चित करना।

**सशक्तिकरण पहल—:** अल्पसंख्यक उम्मीदवारों को उनकी चुनावी प्रतिस्पर्धात्मकता बढ़ाने के लिए वित्तीय सहायता और प्रशिक्षण प्रदान करना।

**शिक्षा और जागरूकता—:** अल्पसंख्यकों को सशक्त बनाने और उनकी राजनीतिक भागीदारी को बढ़ावा देने के लिए शिक्षा और जागरूकता अभियानों में निवेश करें।

**कानूनी सुरक्षा—:** भेदभाव—विरोधी कानूनों को लागू करना और चुनावी प्रक्रियाओं में अल्पसंख्यकों के अधिकारों की रक्षा के उपायों को मजबूत करना।

**अंतर—:धार्मिक संवाद—:** सांप्रदायिक तनाव को कम करने और समावेशी शासन को बढ़ावा देने के लिए अंतर—:धार्मिक संवाद और सामुदायिक सहभागिता को बढ़ावा देना।

इन चुनौतियों से निपटने के लिए बहुआयामी दृष्टिकोण की आवश्यकता है, जिसमें चुनावी, सामाजिक—: आर्थिक और संस्थागत सुधार शामिल हों, साथ ही भेदभाव से निपटने और सामाजिक सामंजस्य को बढ़ावा देने के प्रयास भी शामिल हों। संरचनात्मक बाधाओं को दूर करके और हाशिए पर पड़े समुदायों को सशक्त बनाकर, उत्तराखंड एक अधिक समावेशी और प्रतिनिधि राजनीतिक परिदृश्य को बढ़ावा दे सकता है।

**A. नीति अनुशासन****१. चुनाव सुधार—:**

अधिक न्यायसंगत प्रतिनिधित्व सुनिश्चित करने

के लिए अल्पसंख्यकों के लिए आनुपातिक प्रतिनिधित्व प्रणाली या आरक्षित सीटें लागू करना।

गेरीमैडरिंग को रोकने और अल्पसंख्यक प्रतिनिधित्व को बढ़ावा देने के लिए निष्पक्ष निर्वाचन क्षेत्र परिसीमन का संचालन करना।

**२. सामाजिक—:आर्थिक विकास पहल—:**

अल्पसंख्यकों के बीच सामाजिक—:आर्थिक असमानताओं को दूर करने के लिए लक्षित विकास कार्यक्रमों को लागू करना।

अल्पसंख्यक समुदायों को आर्थिक रूप से सशक्त बनाने के लिए सकारात्मक कार्रवाई नीतियां लागू करना और कौशल विकास को बढ़ावा देना।

**३. सामाजिक एकता को बढ़ावा देना—:**

राजनीतिक लामबंदी के लिए समावेशी माहौल बनाने हेतु अंतर—:धार्मिक संवाद और सद्भाव को बढ़ावा देना।

सामुदायिक सहभागिता कार्यक्रमों में निवेश करें जो विविध धार्मिक समूहों के बीच आपसी समझ और सहयोग को बढ़ावा देते हैं।

**सामुदायिक सहभागिता और वकालत****१. सामुदायिक संगठनों को मजबूत बनाना—:**

अल्पसंख्यक समुदाय संगठनों के लिए क्षमता निर्माण कार्यक्रम और संसाधन जुटाने में सहायता प्रदान करना।

अल्पसंख्यक समूहों और नागरिक समाज संगठनों के बीच गठबंधन निर्माण और सहयोग को प्रोत्साहित करना।

**२. राजनीतिक शिक्षा और जागरूकता—:**

राजनीतिक साक्षरता और सशक्तिकरण को बढ़ाने के लिए अल्पसंख्यक समुदायों के अनुरूप नागरिक शिक्षा कार्यक्रम विकसित करना।

अल्पसंख्यक अधिकारों और राजनीतिक भागीदारी के अवसरों के बारे में जागरूकता बढ़ाने के लिए मीडिया अभियान और सामुदायिक संवाद शुरू करना।

**३. युवा सहभागिता और नेतृत्व—:**

नेतृत्व विकास कार्यक्रमों और युवा सहभागिता पहलों के माध्यम से युवा अल्पसंख्यक नेताओं को सशक्त बनाना।

युवा सक्रियता और अल्पसंख्यक अधिकारों के लिए वकालत को बढ़ावा देना, राजनीतिक प्रक्रिया में उनकी सक्रिय भागीदारी को प्रोत्साहित करना।

इन सिफारिशों को लागू करने से संरचनात्मक बाधाओं को दूर किया जा सकता है, अल्पसंख्यक समुदायों को सशक्त बनाया जा सकता है और राजनीतिक क्षेत्र में उनके सार्थक प्रतिनिधित्व को बढ़ावा दिया जा सकता है। समावेशी शासन और सामाजिक न्याय को बढ़ावा देकर, उत्तराखंड एक अधिक न्यायसंगत और भागीदारीपूर्ण लोकतंत्र का निर्माण कर सकता है जहाँ सभी की आवाज सुनी जाती है और उन्हें महत्व दिया जाता है।

### निष्कर्ष

उत्तराखंड में मुस्लिम, सिख, ईसाई और बौद्ध सहित धार्मिक अल्पसंख्यक मतदाता और उम्मीदवार के रूप में राजनीतिक प्रक्रिया में सक्रिय रूप से भाग लेते हैं, लोकतांत्रिक ढांचे के भीतर अपने अधिकारों की वकालत करते हैं। उनके प्रभाव के कारण समावेशी विकास कार्यक्रमों का क्रियान्वयन, अल्पसंख्यक अधिकारों की सुरक्षा और सामाजिक सामंजस्य को बढ़ावा मिला है। इसके बावजूद, चुनावी प्रणाली में संरचनात्मक बाधाओं, पक्षपातपूर्ण उम्मीदवार चयन प्रक्रियाओं, सामाजिक—आर्थिक असमानताओं, शैक्षिक बाधाओं और भेदभाव के कारण उन्हें राजनीतिक लामबंदी और प्रतिनिधित्व में महत्वपूर्ण चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। इन चुनौतियों से निपटने के लिए एक व्यापक दृष्टिकोण की आवश्यकता है जिसमें चुनावी सुधार, सामाजिक—आर्थिक सशक्तिकरण पहल, सामुदायिक सहभागिता और वकालत के प्रयास शामिल हों। समावेशी शासन को बढ़ावा देना, अल्पसंख्यक अधिकारों की रक्षा करना और अंतरधार्मिक संवाद को बढ़ावा देना एक न्यायसंगत और लोकतांत्रिक समाज के निर्माण के लिए आवश्यक है जहाँ सभी आवाजों का सम्मान किया जाता है।

उत्तराखंड के विकास के लिए समावेशी राजनीतिक प्रक्रियाएँ महत्वपूर्ण हैं, जो यह सुनिश्चित करती हैं कि धार्मिक अल्पसंख्यक राज्य की सांस्कृतिक समृद्धि और सामाजिक ताने—बाने में सार्थक योगदान दें। अल्पसंख्यकों को उनके अधिकारों की

वकालत करने और निर्णय लेने में भाग लेने के लिए सशक्त बनाकर, नीति निर्माता उत्तरदायी नीतियाँ बना सकते हैं जो सभी नागरिकों की जरूरतों को पूरा करती हैं। समावेशी शासन सामाजिक सामंजस्य, सद्भाव और आपसी सम्मान को बढ़ावा देता है, जिससे शांति, स्थिरता और समृद्धि को बढ़ावा मिलता है।

उत्तराखंड के समग्र विकास के लिए समावेशी राजनीतिक प्रक्रियाओं को अपनाना महत्वपूर्ण है। अल्पसंख्यक अधिकारों को बढ़ावा देने और राजनीतिक भागीदारी को बढ़ाकर, हितधारक एक अधिक न्यायसंगत और जीवंत समाज का निर्माण कर सकते हैं, जिससे भविष्य की पीढ़ियों के लिए शांति, समृद्धि और प्रगति सुनिश्चित हो सके। आज समावेशी शासन में निवेश करने से राज्य के समग्र कल्याण के लिए दीर्घकालिक लाभ प्राप्त होंगे। और भारत विश्व में लोकतंत्र प्रणाली में नजीर बन सकेगा

### संदर्भ सूचि ग्रंथ

1. <https://censusindia.gov.in/census.website/>
2. [https://en.wikipedia.org/wiki/Geography\\_of\\_Uttarakhand](https://en.wikipedia.org/wiki/Geography_of_Uttarakhand) Banerjee, A., & Somanathan, R. (2007). The political economy of public goods: Some evidence from India. \*Journal of Development Economics, 82\*(2), 287-314.
- 3) Bhargava, R. (2006). \*Political theory: An introduction\*. Pearson Education India.
- 4) Chandra, K. (2004). \*Why ethnic parties succeed: Patronage and ethnic head counts in India\*. Cambridge University Press.
- 5) Gupta, D. (2005). \*Caste in question: Identity or hierarchy?\*. Sage Publications India.



30

## वर्तमान वैश्विक परिदृश्य में भारतीय ज्ञान परम्परा एवं राष्ट्रीय शिक्षा नीति—२०२०

डॉ. सरोज पांडे

सहायक आचार्य

दयानन्द महिला प्रशिक्षण महाविद्यालय,

कानपुर नगर (उ.प्र.) भारत

\*\*\*\*\*

### शोध सारांश :

भारतीय संस्कृति एवं संस्कृत का मूल आधार ही भारतीय ज्ञान परम्परा है। भारतीय ज्ञान परम्परा भारतवर्ष में प्राचीन काल से चली आ रही शिक्षा प्रणाली है। इसके अंतर्गत वेद, वेदांग, उपनिषद्, श्रुति, स्मृति से लेकर विभिन्न प्रकार के दर्शनशास्त्र, धर्मशास्त्र, अर्थशास्त्र, शिक्षाशास्त्र, नाट्यशास्त्र, प्रबन्धन एवं विज्ञान विद्याशाखा इत्यादि के अथाह ज्ञान भण्डार हैं। भारतीय ज्ञान परम्परा के अंतर्गत शिक्षा को विद्या, ज्ञान, दर्शन, प्रबोध, प्रज्ञा, वागीशा एवं भारती इत्यादि शब्दों से परिभाषित किया गया है। भारतीय ज्ञान परम्परा प्रज्ञा का प्रतीक है जिसमें ज्ञान एवं विज्ञान, लौकिक एवं पर-लौकिक, कर्म एवं धर्म तथा भोग व त्याग का अद्भुत समन्वय रहा है। इस प्रकार प्राचीन समय से ही शिक्षा के प्रति भारतीय ज्ञान परम्परा का दृष्टिकोण अत्यन्त व्यापक एवं सूक्ष्म रहा है। वर्तमान समय में राष्ट्रीय शिक्षा नीति, २०२० के अंतर्गत भारतीय ज्ञान परम्परा के अध्ययन-अध्यापन में विशेष बल दिया गया है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति, २०२० भारत के सनातन ज्ञान एवं विचारों के समृद्ध आलोक में निर्मित की गयी है। इसके आधार स्तंभों में भारतीय ज्ञान परम्परा को भी केंद्रीय स्तम्भ माना गया है। इस दिशा में नयी पीढ़ी को भारतीय ज्ञान परम्परा से जोड़ने के लिए विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने अभिनव पहल की

है। इसके अन्तर्गत प्रत्येक अनुशासन विषय की पाठ्यचर्या में भारतीय ज्ञान परम्परा से सम्बन्धित ऐसे संप्रत्ययों को जोड़ा जा रहा है जिनके अध्ययन द्वारा निश्चित रूप से नयी पीढ़ी के विद्यार्थियों में भारतीय होने का गौरवबोध जागृत होगा।

**महत्वपूर्ण शब्द :** वैश्विक परिदृश्य, शिक्षा प्रणाली, भारतीय ज्ञान परम्परा, राष्ट्रीय शिक्षा नीति—२०२०

### प्रस्तावना :

भारतीय ज्ञान परंपरा अद्वितीय ज्ञान और प्रज्ञा का प्रतीक है जिसमें ज्ञान और विज्ञान, लौकिक और पारलौकिक, कर्म और धर्म तथा भोग और त्याग का अद्भुत समन्वय है। ऋग्वेद के समय से ही शिक्षा प्रणाली जीवन के नैतिक, भौतिक, आध्यात्मिक और बौद्धिक मूल्यों पर केंद्रित होकर विनम्रता, सत्यता, अनुशासन, आत्मनिर्भरता और सभी के लिए सम्मान जैसे मूल्यों पर जोर देती थी। वेदों में विद्या को मनुष्यता की श्रेष्ठता का आधार स्वीकार किया गया था। छात्रों को मानव, प्राणियों एवं प्रकृति के मध्य संतुलन को बनाए रखना सिखाया जाता था। शिक्षण और सीखने के लिए वेद और उपनिषद् के सिद्धांतों का अनुपालन जिससे व्यक्ति स्वयं, परिवार और समाज के प्रति कर्तव्यों को पूरा कर सके, इस प्रकार जीवन के सभी पक्ष इस प्रणाली में सम्मिलित थे।

भारतीय ज्ञान परंपरा ने सीखने और शारीरिक विकास दोनों पर ध्यान केंद्रित किया। कर्म वही है जो बंधनों से मुक्त करे और विद्या वही है जो मुक्ति का मार्ग दिखाए। इसके अतिरिक्त जो भी कर्म हैं वह सब निपुणता देने वाले मात्र हैं। शिक्षा के इस संकल्प को भारतीय परंपरा में अंगीकृत कर तदनु रूप ही विश्वविद्यालयों और गुरुकुलों में शिक्षा दी जाती थी। घर, मंदिर, पाठशाला तथा गुरुकुल में संस्कार युक्त स्वदेशी शिक्षा दी जाती थी। उच्च ज्ञान के लिए छात्र विहार और विश्वविद्यालयों में जाते थे तथा शिक्षण अधिकतर मौखिक था, छात्रों को कक्षा में जो विषय पढ़ाया जाता था उसको वो याद कर मनन करते थे। प्राचीन और सनातन भारतीय ज्ञान और विचार की समृद्ध परंपरा के आलोक में राष्ट्रीय शिक्षा नीति